सबरस

हाइकु काव्य

डॉ भगवतशरण अग्रवाल

साहित्य-भारती प्रकाशन

अहमदाबाद-15

प्रकाशक साहित्य-भारती
396 सरस्वतीनगर,
आजाद सोसाइटी के पास,
अहमदाबाद - 380 015

वितरक बाबूभाई एच शाह
पार्श्व प्रकाशन
निशापोल, झवेरीवाड,
अहमदाबाद-380 001

अक्षर- लेखित ग्राफिक्स,
संयोजन 10 रूपमाधुरी सोसाइटी,
योगानर्सरी के पास, माणेकबाग,
अहमदाबाद-380 015

आवरण चित्र जय पचोली

मुद्रक हरजीभाई पटेल
कृष्णा प्रिंटरी
966, नारायणपुरा, जूना गाँव,
अहमदाबाद - 380 013
(दूरभाष 7484393)

मूल्य रु 50/
विदेशों में 10 डॉलर

प्रथम संस्करण, दीपावली 1997

SABRAS (Haiku Poems) by Dr Bhagwat Saran Agrawal
396 Saraswatinagar Ahmedabad 380 015
Phone (Resi) 079-6740778

अपनी बात

गुजरात में हमारी पहली दीपावली थी। रात को देर से सोए थे, इसलिए उठने में देर होने की सम्भावना थी। (उत्तर प्रदेश में होते तो रात भर ताश खेलते होते और सुबह को कब सोते, कब जागते, कोई हिसाब न होता।) ब्राह्ममुहूर्त में ही दरवाजे पर खटखटाहट हुई और आवाज आई – 'सबरस ले लो सबरस'। कुछ समझ न पाए। दरवाजा खोलने पर एक किशोर को खड़ा पाया जिसने तत्परता से पत्नी के हाथ में नमक की दो चार डलियें रख दीं। हम भौचक्के से बने रहे। किशोर जल्दी में लगा फिर भी जैसे वह किसी प्रतीक्षा में था। पड़ौसी भी जाग गए थे। उनके साथ भी वैसा ही हुआ। उनकी पत्नी ने एक पैसा उस युवक के हाथ में रख दिया और हम भी वैसा ही करने को कहा। हमने भी वही किया। यह सन् 56 की बात है। एक पैसे का भी मूल्य था। बाद को पता चला कि गुजरात में दीपावली का दूसरा दिन अर्थात् नए साल का पहला दिन। 'सबरस' के नाम से नमक का वितरण अर्थात् शुभ-शकुन। इसके बाद माली आया तोरण बाँधने ढोली आते रहे – ढोलनाद के माध्यम से बधाई देने, चपरासी, दूधवाला डाकिया टेलीफोनवाला, तारवाला सफाई कामदार और भी कुछ लोग आए, 'बोनी' लेने। दिन भर मित्रों का ताँता बँधा रहा, – नए साल की बधाई देने। घर में थोड़ी सी मिठाई थी। बाद को दुबारा लाना पड़ी। मुश्किल यह थी कि लोग खाते नहीं थे। थोड़ा टुकड़ा तोड़कर मुँह में रख लेते। टूटी हुई मिठाई दूसरा को रखते सकोच होता। इसप्रकार घर में मिठाई के अनेक टुकड़े इकट्ठे हो गए जो शाम को पत्नी ने कामवाली को दे दिए। बाद को बहुत कुछ सीख लिया। अब हम उस दिन सुबह सुबह तैयार हो जाते हैं सबरस से स्वागत करवाने और मित्रों का स्वागत करने और उनके घर जाकर स्वयं भी उसी बधाई देने की क्रिया को दोहराने।

भाइदूज के दिन मिठाई खाते समय हमारे प्राध्यापकीय मन को 'सबरस' की याद हो आई। मस्तिष्क का शोधक्षेत्र सक्रिय हो उठा। याद आया कि बचपन में माताजी परीक्षा देने जाते समय दूध-पड़ा खिलाती थीं। दशहरे और दुलहँडी के दिन चाँदी का रुपया और दही ब्राह्ममुहूर्त में जगाकर दिखाती थीं, मेहरी मछलियाँ और कहार नीलकठ के दर्शन कराने लाते थे। हमारी सास्कृतिक परम्पराओं के अनेक रहस्य गुप्त ही रह गये हैं। किन्तु 'सबरस' कोई रहस्य नहीं है। षडरस में लवण का स्थान निर्विवाद है। पशु-पक्षी तक इसे पसन्द करते हैं। लावण्यहीन रूप भी केवल रग रह जाता है। आकर्षण और मोहिनी के लिए लावण्य का होना आवश्यक है। माधुर्य का आनद भी नमकीन के साथ

ही सभव हे । गुजरात में इसे 'सबरस' कहकर इसके महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है । गुजरात देश भर का अपनी सुगन्ध 'सवरस' भेजता भी हे । काव्य में भी रस का स्थान निर्विवाद है। सृष्टि का निमाण अनकानेक उपकरणों स हुआ हे। उसम विराधाभासी तत्त्वों का भी समुचित स्थान है। यही स्थिति जीवन की है। जीवन म भी सुख-दुख, पाप-पुण्य, जन्म-मृत्यु, रूप-कुरूप हास्य-रुदन जेसी अनेक विरोधाभासी स्थितियाँ ह । एक ओर लावण्ययुक्त सौन्दर्य है तो दूसरी और विसगतियों विडम्बनाओं से परिपूर्ण नरक की स्मृति करा देनेवाला परिवेश । सृष्टि और जीवन के राग-विरागयुक्त ताल-बेताल सगीत क प्रत्येक स्वर में एक एक हाइकु छिपा है। इसलिए हाइकु-काव्य का अनुशीलन जीवन की समग्रता क सदभ में, सभी जलाशयों, सागर तथा वर्षा सभी का प्रतिनिधित्व करनेवाली बूँद क रूप में करना चाहिए।

काव्य के अतरग और बहिरग को लेकर जो मतमतातर हें वह कोई नई वात नहीं हे । असि को छोड म्यान के पीछ दौडनेवालों की भी कमी नहीं है। तीन चरण सत्रह अक्षर – यह हाइकु का क्रम है । इसमें मढा जानवाला चित्र ही हाइकु ह । वह चित्र कैसा है ? उसका निर्णय पाठक और समीक्षक ही कर सकत हैं । हाइकुकार का यह काम नहीं हे । कवि की निरकुशता का अधिकार, उसे वाणीविलास या शब्दा के साथ व्यभिचार करने की सत्ता नहीं देता।

हिन्दी के विभिन्न काव्यरूपों के मध्य हाइकु ने भी पिछले तीस चालीस वर्षों में अपना स्थान सुदृढ कर लिया है । उस पर अनेक उपाधिपरक शोधकार्य हो चुके हैं और हा रहे हैं । समीक्षाय हा रही हैं । विभिन्न पत्रिकाओं के विशेषाक निकल रहे हें । अथात् उसका समझने ओर समझाने का रचनात्मक परिवेश बन चुका है । जनवरी 198ɔ में छपा मरा 'शाश्वत क्षितिज हाइकु-सग्रह हिन्दी का भी प्रथम हाइकु-सग्रह था । तव से अव तक 15 20 व्यक्तिगत हाइकु-सग्रह प्रकाश मं आ चुक हैं । किन्तु हाइकु के वर्णविन्यास और सबोधन को लेकर आज भी अनिश्चितता प्रवर्त्तमान है। हाइकु हाइकू हायकु हायकू - म से कौन सी वतनी शुद्ध मानी जाए, इसकी भी चर्चायें हाती हैं । मेरा मानना है कि हम सभी हाइकुकारों एव समीक्षकों में डॉ सत्यभूषण वर्मा को जापानी भाषा और काव्यशास्त्र का ज्ञान सब स अधिक है । इसलिए उनके द्वारा दिए गए हाइकु उच्चारण को ही शुद्ध मान लेना चाहिए । गजल के क्षेत्र में भी कभी दिल्ली स्कूल लखनऊ स्कूल हैदरावाद स्कूल रेख्ता रेख्ती जैसे मतभेद काफी समय तक चले। आज वह वात नहीं है । सस्कृत काव्यशास्त्र में पाचालो गौडी वैदर्भी तथा लाटी जैस रीतिभेद रहे । कैम्ब्रिज और ऑक्सफार्ड विश्वविद्यालय पास पास

होते हुए भी उनके उच्चारणों में भेद माना जाता है। किन्तु इन सत्रस साहित्य-रसिकों का कोई लेना देना नहीं होता। यह सब तो भाषाशास्त्रियों व्याकरणाचार्यों और काव्यशास्त्रियों का क्षेत्र है। हाइकु के स्थान पर त्रिशूल त्रिपदी क्षणिका, कणिका सूक्ष्मिका शब्दिका मनके कैप्सूल-कविता आदि कहने से उसका भारतीयकरण नहीं हो जाता। गुलाब को किसी भी नाम से पुकारने पर वह गुलाब ही रहेगा। वैसे आजकल नीले पीले, हरे, काले इत्यादि विभिन्न रंगों में भी वर्णसंकर गुलाब उगाए जा रहे हैं। मुश्किल यह है कि वे देखने में तो सुंदर लगते हैं परन्तु उनमें खुशबू नहीं होती। हमारे यहाँ एक एक अक्षर के चार चरणोंवाले 'उक्ता' छन्द से लेकर 26 26 वर्णवाले चार चरणोंवाले उत्कृति छन्द, लौकिक संस्कृतकाल से प्राप्त होते हैं। 26 से अधिक अक्षरवाले चार चरणोंवाले छन्द भी हैं जो 'चण्डवृष्टि' दण्डक' कहलाते हैं। केवल वेदों में ही गायत्री जैसे त्रिपदी छन्दों के प्रयोग मिलते हैं। तीन अथवा छः अथवा अधिक पादोंवाले छन्दों को गाथा भी कहा गया है। बाद को तो गायत्री भी 6 6 अक्षरोंवाले चार चरणोंवाला छन्द बन गया। 5 7 5 के विषम चरणोंवाला 17 अक्षरीय छंद वैदिक संस्कृत लौकिक संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश और हिन्दी में नहीं है। एक मित्र ने गायत्री और उष्णिक् का कॉकटेल बनाकर, हाइकु के स्थान पर ककुप् छन्द में काव्यरचना करने का आग्रह किया है। साथ ही उसे सरल भी बताया है। परन्तु उनके स्वयं के दिए गणित 8 12 8 के अनुसार अक्षरों की संख्या 28 हो जाती है। हाइकु स्वयं भी तांका छन्द का एक भाग रहा है। उसका स्वतंत्र विकास बाद को जापान में हुआ। बन्धुवर डॉ आदित्यप्रतापसिंह ने कोरियायी छन्द 'सिजो' में सुन्दर सशक्त काव्य रचना करी है। इसप्रकार विभिन्न विदेशी छन्दों के प्रयोग हिन्दी काव्यक्षेत्र में हुए हैं। अन्य भारतीय भाषाओं में भी अवश्य ही हुए होंगे। गुजराती में अनेक मूर्धन्य कवियों ने सशक्त सॉनेट लिखे हैं। किसी भी काव्यरूप के राष्ट्रीयकरण की बात करना सूर्य-चन्द्र के राष्ट्रीयकरण करने जैसी बात है। कवि की संवेदनाओं का मार्मिक एवं प्रभावोत्पादक सम्प्रेषणीयता का माध्यम छन्द है। यह कार्य यदि छन्दमुक्त कविता के माध्यम से हो सकता है तो फिर छन्द की भी आवश्यकता कहाँ है? हम अपने जीवन में घर में, व्यवसाय में अनेक विदेशी वस्तुओं का केवल प्रयोग ही नहीं करते बल्कि उन्हें प्राथमिकता देते हैं। और एक काव्यरूप का राष्ट्रीयकरण करके अपने शुद्ध भारतीय होने का ढोंग करते हैं। जीवन के अनेक विरोधाभासों में से एक यह भी है। एक दूसरे दृष्टिकोण से देखें। यदि इस मान्यता में जरा भी तथ्य है कि आर्यजाति भारत प्रवेश के समय आधा ऋग्वेद अपने साथ लायी थी (पारसियों के धर्मग्रन्थ

जिन्दावेस्ता से उसका तुलना प्रकाशित हो चुकी है ।) तब तो ऋग्वेद के अनेक छन्द भी पश्चिम की देन माने जाकर विदेशी कहलायेंगे । इसप्रकार हिन्दी हाइकु को जापानी काव्यशास्त्र की कसौटी पर कसकर उसके आठ अंगों सोनोयागा किरेजी किगो, ओनजा इत्यादि की दृष्टि से उसका विश्लेषण करना भी मैं अनावश्यक मानता हूँ। वैसे यह क्षेत्र समीक्षकों के निर्णय करने का है ।

हाइकु अपने विकास के प्रथम चरण में जेन दर्शन से प्रभावित काव्यरूप रहा । दूसरे चरण में प्रकृति या ऋतुपरक काव्य बना और तीसरे चरण में विषयवस्तु की मर्यादाओं से मुक्त काव्यरूप बना । सदियों तक हास्य - व्यंग्यपूर्ण हाइकु के लिए सिनिर्यु संज्ञा का प्रयोग होता रहा । किन्तु जीवन की विषमताओं के विस्तृतीकरण ने यह सीमा भी तोड दी है । विशेषकर हिन्दी हाइकु के क्षेत्र में ।

भारतीय भाषाओं में लिखा हाइकु-काव्य अभी तक एक लोकप्रिय काव्यरूप नहीं बन सका है । इसके अनेक कारण हैं जिनमें से एक यह है कि उसे भारतीय भाषाओं में अवतरित हुए लगभग साठ वर्ष ही हुए हैं । जापान में वह जापानी भाषा के अक्षरों की अर्थबहुलता तथा शताब्दियों से लिखे जाने के कारण अवश्य ही काफी जनप्रिय है । हिन्दी में हाइकु अभी शास्त्रीय काव्य की शैशवावस्था में है । वैसे मुझे कई कवि सम्मेलनों एवं गोष्ठियों में हाइकु सुनाते समय सुन्दर प्रतिभाव प्राप्त होने का सौभाग्य मिला है । शास्त्रीय काव्य को शास्त्रीय संगीत के समान आत्मसात कर उसका आनंद प्राप्त करने के लिए एक विशेषज्ञता एवं काफी परिपक्वता की आवश्यकता होती है । उसके लिए केवल सहृदय होना ही काफी नहीं है । वैसे भी काव्य को केवल आलोचक की दृष्टि से पढने पर उसके आनंद तत्त्व की हत्या हो जाती है । काव्य में आस्वादन का महत्त्व होता है । रसास्वादन करने के पश्चात ही उस आनंद में विक्षेप डालनेवाले तत्त्वों का विश्लेषण वास्तविक समीक्षा कही जा सकती है । हाइकु में तीन चरण हैं या चार सत्रह अक्षर हैं या अठारह या सोलह - यह चर्चा उसके फ्रेम की चर्चा है । जापान में भी एक दो अक्षरों के फेरवाले हाइकु वहाँ के प्रसिद्ध हाइकुकारों ने लिखे हैं । नहीं तो यह तो वैसे ही हुआ जैसे कि रामचरितमानस में आठ काण्ड नहीं हैं इसलिए हम उस महाकाव्य न मानें । हाइकु का मर्म उसमें निहित वस्तु तत्त्व में है । क्या वह आपके मन-मस्तिष्क के किसी भाग का स्पर्श कर पाती है या नहीं ? लघु छंद में उक्ति-वैचित्र्य का आनंद ऊहा के बिना संभव नहीं होता । हाइकु का आनंद प्राप्त करने की ऊहा-प्राप्ति ज्ञान एवं अनुभव से ही संभव है । हाइकु में भावों की संश्लिष्टता एवं गहनता तो संभव है किन्तु कल्पना की लम्बी उडान का चित्रण संभव नहीं। जीवन का ठोस यथार्थ,

अनुभवजन्य तथ्य तथा दार्शनिक चिंतन का सारतत्त्व हो उसमें अधिक व्यक्त होता है। कभी कभी उसमें केवल सौन्दयपूर्ण मार्मिक दृश्य का अंकन मात्र भी होता है। अलग अलग हाइकु अलग अलग व्यक्तियों को पसंद आएँ ऐसा भी होता है। इसमें सपाटबयानी संभव है। सूत्रकाव्य एवं सूक्तिकाव्य के रूप में इसमें दूर की कौडी भी हो सकती है। प्रतीक और बिम्ब और कहीं कहीं अन्योक्ति इसे सारगर्भित एवं प्रभावशाली बनाने में सहायक होते हैं किन्तु भावों का शृंगार करने, सूक्ष्म नक्काशी या पच्चीकारी करने का विविध उपकरणों से सजाने और दृष्टांतों से अपनी बात का समर्थन करने या प्रमाणित करने का इसमें अवकाश नहीं होता।

कविता मन की भाषा होती है। इसे कितना भी परिभाषित करने का प्रयत्न किया जाए, शब्दों में बाँधना संभव नहीं। इसी प्रकार हाइकु का फ्रेम निश्चित है। उसके चित्र की परिभाषा संभव नहीं। चित्र बन जाने पर व्याख्याएँ संभव हैं।

मनुष्य अपने अतीत से मुक्त नहीं हो पाता। यह उसकी विवशता भी है और सीमा भी। हमारे शरीर और मन दोनों का अस्तित्व अतीताधारित है। साधारणतया मानव मन अपने अतीत से बँधे रहना भी चाहता है। भविष्य से वह भयभीत रहता है। भविष्य उसे मृत्यु तक ले जाता है तो अतीत मनु तक। संतजन उसे इन दोनों से सदैव के लिए मुक्त करने का मार्ग बताते हैं। काव्यानंद उसे कुछ समय के लिए उस मुक्तावस्था में पहुँचाने का माध्यम बन सकता है। पलायनवाद भी एक प्रकार के ध्यानयोग की गरज सारता है। एक सुन्दर सशक्त हाइकु भी कुछ क्षणों के लिए ही सही यही कार्य करता है। सा विद्या या विमुक्तये।

किसी भी कवि की सभी रचनाएँ सभी को आंदोलित नहीं करतीं। हाइकु के विषय में भी यही तथ्य याद रखना चाहिए। आशा है कि इस संग्रह के कुछ हाइकु अवश्य ही अपने सवरस सौन्दर्य के साथ आपके साथ तादात्म्य स्थापित करने में सफल होंगे। मैं अपने उन सभी आदरणीय पाठक मित्रों का आभार मानता हूँ जो समय समय पर अपने प्रतिभावों के माध्यम से मुझे प्रोत्साहित करते रहते हैं। इस संग्रह के हाइकुओं के विषय में भी आपके प्रतिभावों की प्रतीक्षा रहेगी।

दीपावली, 1997 — **भगवतशरण अग्रवाल**

1 इसी भ्रम मे —
यह मेरा घर है ।
कटी जिन्दगी ।

2 गाधी-जयन्ती
शोक मनाते चर्खे
रोतीं तकलीं ।

3 पनघट प
कजियायें गगरी
सास-बहू की ।

4 डूबनेवाले
नाखुदा के होते भी
डूबते देखे ।

5 फूलों की मार
काँटों की चुभन से
ज्यादा चुभे है ।

6 एक बूँद में —
सागर भी, नभ भी,
हवा, अग्नि भी ।

7 किसने जानी ?
झरे फूल की व्यथा
स्वजन विछोह ।

8 धरा की प्यास
लाखो सावन-भादों
बुझा न पाये ।

9 पहले 'मैं' था,
अब तू ही 'तू', क्या है ? –
द्वैत अद्वैत ।

10 ये जानने म
'कुछ नहीं जानता' —
जीवन बीता ।

11 जरूरी नहीं
हरेक की रात का
सवेरा हो ही ।

12 वृक्ष सा बढा
मगर खजूर का
छाया भी नहीं ।

13 पढा बहुत —
हल न कर पाया ?
शून्य अक भी ।

14 सभी जानते
साथ न जाना कुछ
फिर भी जोडें ।

15 हमसफर
कम कहाँ थे ? – पर
साथ न रहे ।

16 गम भी दिए
भूलने की सजा भी
कैसे खुदा हो ?

17 सूर्य तो उगा
दिलों का मैलापन
दूर न हुआ ।

18 गिनता रहा
माला के मनकों को
गुनाह नहीं ।

19 जड़ें उखाड़
पेड़ से आशा करे –
फल-फूल की ।

20 कारा में जन्म
कोई उत्सव नहीं ।
अव्यक्त व्यक्त ।

21 हिमप्रपात
खिलखिलाया कौन ?
पहाड़ों बीच ।

22 पूस की रात
ठिठुरतीं हवाएँ
दस्तक देतीं ।

23 गिराते पख
गुँजाते अमराई
झगड़ें मोर ।

24 अत एक ही
पाँव में लगे वाण,
या हो निर्वाण ।

25 तुम्हारी हँसी
जीवन-सध्या मध्य
ऊषा समान ।

26 शब्द शराबी
सौन्दर्य बना साकी
झूमते अर्थ ।

27 पत्तों का भाग्य
फल खाने को पक्षी
टूटने को वे ।

28 जो दे देता हूँ
वही मेरा है, बाकी—
होने का भ्रम ।

29 एक ही स्वप्न
हँसता गाता प्रात
देश में उगे ।

30 आँखों से आँखें,
जब करतीं बातें,
मुस्काए मौन ।

31 शाम के थके
सुबह घर लौटे
सूर्य के घोडे ।

32 कुछ बाजियाँ
हारने से क्या हुआ ?
खेल बाकी है ।

33 खरीदने हैं ?
बेचता हूँ सपने
कविताओं में ।

34 कुछ न कहो।
मौन में, मौन तुम
दृष्टि में सृष्टि।

35 जाम तो पी लूँ
पर तेरी निगाहें
उठाने तो दे।

36 'मान न मान,
मैं तेरा मेहमान —
बने बुढापा।

37 जीवन प्याला —
ओंठों तक पहुँचे ।
छलक गया ।

38 पुत्र, - वधू का
पुत्री, - जामाता वश
बुढापा रीता ।

39 साथ न देती
दुखों के अधेरों में
अपनी छाया ।

40 बर्फ सी जमी
द्वार पर प्रतीक्षा
स्वप्निल दृष्टि ।

41 अंधकार में
खोज रहा सौन्दर्य
बुद्धिमान 'मैं' ।

42 पत्तों ने गूँथे
शबनम के हार
पहने कौन ?

43 शातिरक्षक –
स्वय नहीं लडते ।
लडवाते हैं ।

44 थका नहीं था !
रास्ता था खूट गया
चलते हुए ।

45 प्रतीक्षा पल
मौसमों में बदले
आँसू भी सूखे ।

46 कहीं से कुछ
सकेत तो दो मुझे
समझूँ तुम्हें ।

47 करील-कुज
नवयौवन झूमे
कृष्ण-बसत ।

48 हरसिंगार
अतिम श्वाँस तक
गध न त्यागे ।

49 हर मोड पे
मिल जाते हो तुम ।
माजरा क्या हे ?

50 नई नहीं हे
फूलों की बेवफाई
काँटों का प्यार ।

51 चाहा और ही !
समझाया और ही !
किया और ही !

52 बेतरतीब
दिन में देखे ख्वाब,
वही जिन्दगी ।

53 कयामत क्या ?
खुदा भी भूल गया
अँगडाई देख ।

54 अतर क्या है ?
बुत और खुदा में -
भ्रम से ज्यादा ।

55 तेरा नाम ले
हरएक डराता
जीऊँ तो कैसे ?

56 मेरे खुदा पै
दिल आ जाए तेरा
ऐसा हसीं है।

57 देखने तो दे
अपना खुदा नासेह्
मेरा ही न हो ?

58 हर जगह
बस ! तेरा नाम था
तो 'मैं' कहाँ था ?

59 पहले गैर
अब अपनों ने डाले
जुबाँ पै ताले ।

60 डाल से गिरा
तो काँटों ने भी बींधा
बेचारा फूल ।

61 देखा किया मैं
वाणी हो गई मूक
होश गायब ।

62 महके धूप
गरमाये चाँदनी
उग्र होती है ।

63 जो जो भी आया
तोडता चला गया
नीड के तृण ।

64 वक्त व तुम
एक जैसे निकले
रोके न रुके ।

65 स्वय बनी माँ
तब समझी पुत्री -
माँ की ममता ।

66 सत्ता न गई !
ब्रज गए उद्धव
परीक्षा लेने ।

67 दृष्टि समक्ष
उडता रहा वक्त
विवश था मैं ।

68 मार डालते
जीवन की कविता
हम स्वय ही ।

69 फूली कपास
'छोरी का' गौना होगा' —
मैकू को आस ।

70 तट के पेड़,
जिससे फूलें, फलें
उसी से डरें।

71 जेठ मास में
शीतल फुहार सी
तुम्हारी हँसी।

72 जवाब दे लेंगे
' खुदा गर मिलेगा ?
कृपालु है वो।

73 जितना तपे
उत्ना खिलखिलाए
गुलमोहर ।

74 गजलें गाते
यौवन छलकाते
झूमें बादल ।

75 अपना क्या था ?
उसने भेजा, आए
बुलाया, चले ।

76 आलमपनाह्
कहलाए बहुत
जिन्दा न बचे।

77 मृत्यु निश्चित
तो क्यों नहीं जी लेते ?
बची जिन्दगी।

78 राग-रागिनी
सातों स्वर दोहराएँ
एक ही नाम।

79 नाचती हवा
वर्षा के नूपुरों में
गूँजे मल्हार।

80 भँवरा देख
सकुची, शरमाई,
मुस्काई कली।

81 फूलों पै बैठ
गुनगुनाना भूले
मोह में डूबे।

82 आहट तक –
कोई जान न पाता ।
चिरशाति को ।

83 असि को छोड
लडते धर्माचार्य
म्यानें ले लेके ।,

84 फूल की जब
गध ही उड गई
गाडो , जलाओ ।

85 सिफ स्मृतियाँ
निपट एकात के
क्षणों में साथी ।

86 होना हमें भी
डाल झरे फूल सा -
वक्त की बात ।

87 धरा को भेंट
यौवनोन्मत्त प्रपात
शात दीखता ।

88 सिहरा तन
अगहनी सर्दी सा
कौन छू गया ?

89 कोई तो है ही ।
सदियों से जिसे ढूँढे
तन्हा सूरज ।

90 प्यार मसीहा
जीवन के घावों को
भरता चले ।

91 परदा डाल
ओझल करें हरि !
क्या कहूँ उन्हें ?

92 देवमंदिर
सीढ़ी नीचे सागर
पाँव पखारे ।

93 गिरि से लड़
धुँआपुआँ होकर
गर्जे प्रपात ।

94 वो इतिहास
मुझ पर क्यों लादा ?
दोहराने को ।

95 पेड़ों में छन
खुशबू भरी किरन
आँखो को चूमे ।

96 मेघधनुष
नभ क्षितिज मध्य
गरबा घूमे ।

97 कृष्ण जन्म का
नभ में रसोत्सव
नाचे दामिनी ।

98 वार करतीं
आधुनिक नजर
मिसाइल सी ।

99 शत्रु ने दिया
स्थायी धर्मचिह्न भी
ईसा को कील ।

100 तुम्हारे बिना
जीवित अभी तक
यकीं न होता ।

101 बाढ के रेले
जीवन बन शत्रु
सग्राम खेले ।

102 तुम्हें जानने
कम एक जीवन
दूसरा कहाँ ?

103 सबध बने
प्लास्टिक के फूलों से।
सुवासशून्य।

104 प्रेम करना
सृष्टि का वरदान
प्रेम ही हो तो ?

105 महुए तले
फूलों की चाँदनी में
छलकें जाम।

106 पहन हुए
तिरंगे के कपडे
फाँकता हवा ।

107 वर्षों का साथ
क्षण भर में भूल
छू होती आत्मा ।

108 कैसे व्यक्त हो ?
जीने की विवशता
चक्रव्यूह में ।

109 द्वन्द्व से जन्म
द्वन्द्वपूर्ण जीवन
द्वन्द्वमुक्ति मृत्यु ।

110 गिरि समक्ष —
तन , गीता समक्ष —
मनाकिंचन ।

111 बन गया हूँ
नोटछाप मशीन
परिवार की ।

112 किनारे बैठ
जीवन विश्लेषण
स्वप्न सा लगे ।

113 कोल्हू-बैल सा
लाखों डग भरूँ हूँ
वहीं का वहीं ।

114 आँखों में चुभें ।
कभी हसीन लगे —
अधूरे स्वप्न ।

115 कभी तो मिलो।
ख्वावो के वाहर भी
रूठें, मनायें।

116 स्वप्न देखता —
'मैं' रहा या आत्मा थी ?
जागेगा कौन ?

117 पर्णविहीन
कुछ वृक्षों पर भी
आता बसन्त !

118 हो न पाता —
अतीतमुक्त, कैसे ?
जीऊँ ये क्षण ।

119 आत्मा पे चर्चा
शव बिना कफन
सदियाँ बीतीं ।

120 काँच में मढ
टँग दिया बापू को
कर्त्तव्य पूरा ।

121 पश्चिमी हवा
धीमे धीमे उतारे
नारी की लज्जा ।

122 दुख ही भेंट
स्वागत करने को
द्वार द्वार पै ।

123 शांति के नाम
उड़ाये कबूतर
हलाल हुए ।

124 प्रेम में स्वार्थ
घी की आहुति सम
स्वाहा ही स्वाहा ।

125 नगा समाज
नेता कफनचोर
देश श्मशान ।

126 मृत्यु का भय
अध्यात्म का पिता
पुत्र वैराग्य ।

127 अंधकार में
परछाई भी त्यागे
अध्यात्म जागे।

128 भाग्य कोई
मौसम नहीं था जो
बदल जाता।

129 जीना मुश्किल
भुखमरी सरल
देश महान।

130 दुख का वृक्ष
अश्रु-कुल्हाडी नहीं
श्रम ही काटे।

131 सोचने से जो
दुश्मन मर जाते
हम होते क्या ?

132 मरते प्राणी,
नहीं मरता वक्त
जो था रहेगा।

133 तेरी आँखों की
अतल गहराई
उभरूँ कैसे ?

134 हमने किए
समय के टुकड़े
भूत-भविष्य ।

135 तारों से खिले,
रात की बारी बाहर
जूही के फूल ।

136 उल्टे-पलटे
रातरानी की गंध
यादों के पन्ने ।

137 रात की नींद
दिनों की ऊष्मा छीनी
महँगाई ने ।

138 समुद्र जल
अपनी रक्षा करे
खारेपन से ।

139 जिसके द्वारा
लक्ष्य मिले, वो राह -
वहीं की वहीं।

140 मधुर होना
गुनाह बन गया
ईख के लिए।

141 खिड़की खोल
अभिसार को आई
पश्चिमी हवा।

142 लगा दाँव पै
देशाभिमान, नेता—
मनाएँ होली।

143 एक पक्ष में
नाश्ता करें, डिनर—
दूसरे दल में।

144 देश खा चुके
अब नभ चरने
निकले नेता।

145 छल छाया न
ग्रहण सा डसा दश
निष्क्रियता दोषी ।

146 सौन्दर्य मुक्ता
सृष्टि-सागर छिपे
दृष्टि चाहिए ।

147 लूटी जा रही
चौराहों पर लज्जा
स्वतन्त्रता की ।

148 भ्रष्टाचार को —
टैक्स ने पहनाया
कानूनी जामा ।

149 जिसको देखो
च्युगम सा चबाए
दुखी क्षणों को ।

150 जीवन जीना
सिखा न पाते — करें ?
मोक्ष का दावा ।

151 हर मोड पे
यादों के झरोखों से
तुम्हीं झाँकतीं।

152 प्रजा द्रौपदी
शासक दुशासन
दाँव लगा लो।

153 स्वतंत्रता की
जड खोदते, बीते—
पचास साल।

154 अदर कहीं
सत का स्वाँग रचा
चोर है बैठा।

155 महँगा सौदा।
बचपन खोकर
मिली जवानी।

156 धरा सुदरी
श्रावण में पहने
हरी चूनरी।

157 इन्फ्लेशन में
वैंक एकाउन्ट के भी
पख निकले।

158 बच्चे कमाएँ
डॉलर, माता-पिता—
वृद्धाश्रम में।

159 शब्दजाल के
व्यापारी नेता, अर्थ—
क्यों न लँगड़ाएँ।

160 जीवन स्वय
धीमे विष सा । कौन ?
किसे मारेगा ?

161 वे भी दिन थे
अमरूद तोडते
मार थे खाते ।

162 स्नेह की आँच
पकाती प्रेमपात्र
झोंके शीतल ।

163 सुख के पीछे
दौड़ता आता दु ख
दोनों अतिथि ।

164 पृथ्वी का बोझ
कौन उठा पाया है ?
नभ के सिवा ।

165 नभ में जड़े
शाश्वत अक्षर
कोई न बाँचे ।

166 घृणा, प्रेम में,
अवरोध बनी क्या ?
कोई भी भाषा ।

167 पहली वार
नन्हे ने तोले पख
पखिणी काँपे ।

168 आगे पहुँचा
पीछे रुकती राह
त्याग मोह को ।

169 यहीं कहीं पै
मेरा खोया यौवन !
किसका जुड़ा ?

170 कोई भी रात
इतनी काली नहीं ?-
सूर्य न देखे ।

171 बन्द हों दंगे
किन्तु घृणा के दाग
कभी न जाते ।

172 कम से कम
नेता करते शर्म
शहीदों की ही ।

173 अहम् की छेनी
खोखली कर बुद्धि
तोडती घर ।

174 नजाकत से
दिल तोडके, खुद –
खफा हो गए ।

175 तुम जा हँसीं
खिल गई चाँदनी
बत्तखें उड़ीं ।

176 रास्ते वीरान
बर्फ से ढँके वृक्ष
कोहरा छाया ।

177 उम्र के साथ
एक एक टूटते
जीवन भ्रम ।

178 नाचके पख
उडने का अधिकार
कम सिद्धात ।

179 भाषा कोई हो ?
जीवन की पहेली
हल न होती ।

180 सावनी बूँदे
बँधी न मुट्ठियों में
बीता यावन ।

181 पहले फूल
फिर झड़ीं पत्तियाँ
वृक्ष बुढाया ।

182 सुलगें दिन
झुलसाए चाँदनी
विहँसे जेठ ।

183 मन ही सूर्य
तन में ही ऋतुएँ
फिरे ब्रह्मांड ।

184 द्वार द्वार पै
देता रहा दस्तकें
वही न मिला ।

185 मौत के बाद
लौटकर आने को
जिन्दा न रहा ।

186 मैं, 'मैं' नहीं हूँ ?
तुम 'तुम' नहीं हो ?
जो नहीं, वो है ।

187 पर्दे में कोई
कर्म करे, वाहर —
मैं, तुम दिखें।

188 जिन्दगी मेरी
निर्णय करे कोई ?
पूछे बिना ही।

189 कारे दौड़तीं
सरकार गिराने
पेट्रोल बचाने ?

190 अनाज सस्ता
साग-सब्जी महँगी
देश स्वतंत्र ।

191 मुद्रा बचाने
जाना पडे विदेश !
बेचारे नेता ?

192 निमित्त बना
लिखता मैं ! सर्जक ? —
कोई और है ।

कुछ प्रतिभाव

कविता का सूखती धारा का जलमय वनाने क लिए जडों का स्पश मुझ आवश्यक लगता है। छदहीनता, छदमुक्ति, स्वच्छदता और गद्यकाव्य परस्पर विच्छिन्न नहीं हैं। उनक भीतर एक अन्त सूत्र व्याप्त रहता है, जिसकी पहचान आपने हाइकु के व्यापक अनुभव से की।

इलाहाबाद - डॉ जगदीश गुप्त

'आप श्रेष्ठ हाइकु निमाता हैं। ..प्रत्येक हाइकु के पीछे ध्वन्यर्थ है।'

दिल्ला - डॉ विजयेन्द्र स्नातक

'आपक सभी हाइकु गभार प्रभाव छोडनेवाले हैं। आपने गागर म सागर हा नहीं भरा है बल्कि गागर में स सागर निकाल लिया है।'

गाजीपुर - विवेकीराय

'हिन्दा हाइकु क क्षत्र में आपका अपना स्थान है। रचनात्मकता तथा विवेचनात्मक स्तर पर इस क्षेत्र में सृजन के समानान्तर आपने उसके अभिज्ञान के लिए जो श्रमसाधना की है वह अविस्मरणाय प्रदेय सिद्ध हागा।

लखनऊ - डॉ सूर्यप्रसाद दीक्षित

'अभी तक सतसया क दोहा का ही नावक क तीर समझत थ। लकिन आपक हाइकुआ का देखकर व विचार पुरान लगन लग।

अरुणाचल प्रदश - डॉ माताप्रसाद
महामहिम राज्यपाल

'आपक एक एक हाइकु म सहृदयों के लिए नाक की न्लोंग या नर्म घास की हरी लाजवन्ती पर क गआ पर पड शुभ्र आस मुक्ताकन से फूटती ऊपर स ता लघु क्षणिक पर भीतर सवदना का धौंक सी लगाती कौंध का सौन्दय उपजाया है। यह हाइकु पर आपका साधनागत अधिकार है।

सानीपत - डॉ रामेश्वरलाल खण्डेलवाल

'अधिकाश हाइकु अत्यत सफल रहे हैं। किसी न किसी एक गहन विचार, चिंतन एव सवेदन को अपने में समेटे हुए हैं।

जोधपुर - डॉ सावित्री डागा

अपने अत्यन्त लघु रूप म भी डॉ अग्रवाल के हाइकु कभी-कभी इतनी वडी बात कह पाते हैं कि उन्हें व्याख्यायित करने के लिए शब्द ही नहीं मिल पाते, सिर्फ उनकी अनुभूति ही की जा सकती हैं-बिल्कुल गूँगे के गुड की तरह। सभवत कविता की प्रभावोत्पादकता का चरम भी यही है।

आगरा - कमलेश भट्ट 'कमल'

आपकी लेखनी में हाइकु ढलकर साकार हुआ है। आपने साधना में हाइकु को साधा है।

दिल्ली — डॉ यत्देव वशी

'छायावादी कवियों में जैसे सुमित्रानन्दन पत प्रकृति के चतुर चितेरे हैं, वैस ही हाइकुओं में आप हैं। अनुभूति की तीव्रता, कथ्य की प्राजलता और भाषा की सहजता आपके हाइकुओं की अनन्यतम विशेषताएँ हैं।

दिल्ली — डॉ सुन्दरलाल कथूरिया

उर्वर कल्पनाशक्ति, उदात्त सोच और सौष्ठव का परिचय डॉ अग्रवाल की हाइकु रचनाएँ देती हैं। इन रचनाओं में जहाँ एक ओर कवि ने परम्परित प्रकृति-मूलक बिम्बों का आलेखन किया है तो उनकी कुछ हाइकु रचनाएँ सामयिक सदर्भो को भी उठाती हैं।

मधुमती' 94 — डॉ भगवतीलाल व्यास

'आपने मन की आँखों से बीज मत्रों की सृष्टि की है। यह एक प्रकार का अन्त साक्षात्कार भी है। पश्यन्ति कहिए। ऐसी साकतिक और व्यजक रचना क लिए हार्दिक बधाई स्वीकार कर।'

गोरखपुर — डॉ रामचन्द्र तिवारी

'श्री अग्रवाल न जीवन के वैविध्य को छोटी छोटी रचनाओं म ऐसे समेट लिया है जैसे अनगिनत पुष्प पखुरियों से कुछ पुष्पों की निर्मिति की गई हो और प्रत्येक पुष्प जीवन के किसी न किसी सदर्भ का उद्घाटक हो। जीवन के बृहदाकार को सम्पुष्ट करते हुए भी हर पुष्प अपनी गध, सुषमा, अवयव-नियोजन, प्रभावान्विति की दृष्टि से पूर्ण है।'

पटियाला — डॉ ब्रजमोहन शर्मा

'लघु आकार की विधा पर अधिकार पाना सरल काम नहीं है लेकिन भगवतशरण अग्रवाल न हाइकु की असाध्य वीणा को साधने में सफलता पायी है। उनके हाइकु कहीं भी अभारतीय या विदेशी नहीं लगते।

अलीगढ — डॉ वेदप्रकाश अमिताभ

'बिम्बों एव सकेतों के माध्यम स सघन अनुभूतियों की अभिव्यक्ति अत्यत कलात्मक है।'

गोरखपुर — डॉ सदानदप्रसाद गुप्त

'एक पाठक क रूप में आपक हाइकु पढकर बहुत आनद आया। गहरे अर्थ हैं इनमें।'

दिल्ली — विष्णु प्रभाकर

'आपने हाइकु के फॉर्म पर अच्छा अधिकार पा लिया है कुछ हाइकु ध्वनिसमृद्ध भी लगे ।'

बम्बई — डॉ चन्द्रकान्त बांदिवडेकर

'हाइकु के आप अज्ञेय के बाद के सब से सशक्त रचनाकार हैं ।'

लखनऊ — डॉ शंभुनाथ चतुर्वेदी

'आपकी कविताएँ छोटी भावगांभीर्य से पूर्ण और गम्भीर चिन्तन से भरी सुंदर लगीं ।'

झांसी — द्वारकाप्रसाद मीतल

'मन-प्राण, बुद्धि और हृदय को प्रभावित किया-आपकी हाइकु सर्जना ने ।'

भिण्ड — डॉ श्याम सनेहीलाल शर्मा

'कविता आशुलिपि में बढ़िया हो सकती है, आपने सिद्ध कर दिखाया ।'

बम्बई — डॉ उमा शुक्ल

'आपके हाइकु सचमुच हाइकु लग रहे हैं ।'

नई दिल्ली — डॉ रमानाथ त्रिपाठी

'आपके हाइकु मार्मिक बन पडे हैं ।'

दिल्ली — डॉ हरदयाल

'कविता में क्रांति और क्रांति में कविता का श्रेष्ठतम उदाहरण आपके हाइकु हैं ।'

नई दिल्ली — डॉ शंकरदयाल सिंह

'इससे बेहतर हाइकु नहीं लिखे जा सकते ।'

राँची — डॉ बालेन्दुशेखर तिवारी

'हिन्दी हाइकु काव्य को आपकी देन अप्रतिम है ।

शांतिनिकेतन — डॉ सियाराम तिवारी

'मैंने अनुभव किया कि इस विधा पर आपका जबरदस्त अधिकार है । सघन जीवनानुभवों और उनसे प्रसूत विचारों को इतने कम शब्दों में व्यजित करना कोई साधारण कार्य नहीं है ।

गोरखपुर — डॉ कृष्णचन्द्र लाल

'हाइकु कविताओं में जो पैनी दृष्टि तीक्ष्ण बुद्धि और व्युत्पन्न भावबोध का चामत्कारिक प्रभाव होता है उसे प्रस्तुत करने में आप सफल रहे हैं ।

बीकानेर — मूलचन्द देवताले

'आपके हाइकु प्रभावशाली भावमय एवं नवबिम्बों से निर्मित सशक्त रचना होते हैं।'

मेरठ — डॉ. गोविन्दजी

'डॉ. अग्रवाल की हाइकु रचनाएँ मृतिका-दीप का सहज सज्ञान ही नहीं करातीं, बल्कि मानवीय सरोकारों को समग्रता से अंतर्ग्रथित कर बोधगम्य भी बनाती हैं।

बक्सर — लक्ष्मीकान्त मुकुल

'जीवन में व्याप्त विसंगतियों-विडंबनाओं से सीधा साक्षात्कार कर उन्हें स्पष्ट शब्दों में हाइकु काव्य-कला के माध्यम से अभिव्यक्त करनेवाले चितेरे हाइकुकार डॉ. अग्रवाल ने जीवन के विरोधाभासों से तादात्म्य स्थापित कर सम-विषम परिस्थितियों की पीड़ा को सामाजिक युगबोध के यथार्थ के साथ अपने 'अर्घ्य' हाइकु काव्य-संग्रह में स्वर प्रदान किया है।

दिल्ली — डॉ. हरीशकुमार सेठी

हाइकु दिमागी कसरत न होकर एक भावात्मक अभिव्यक्ति है। इनमें शब्दचयन और पंक्ति विन्यास में बुद्धि की महत्ता स्पष्टतः दीख पड़ती है। किन्तु तीव्र भावान्मेष का एक विशेषता होती है। वह अपनी अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल शब्दों का चुनाव स्वतः कर लेता है। यह विशेषता कवि अग्रवाल की हाइकु कविताओं में सर्वत्र दिखाई देती है।

दमण — डॉ. सुरेशचन्द्र सिन्हा

'तुम्हारे अन्तर रस से भीगी इस स्नेहिल भेंट के अगोचर अक्षरों को केवल मैं ही बाँच सकता हूँ।

मुरादाबाद — डॉ. अविनाशचन्द्र अग्रवाल

'आपकी अनुभूति भंगिमाएँ हृदय बाँध लेती हैं। अनेक बिंब ऐसे हैं जिनकी टक्कर के बिंब हिन्दी कविता में खोजना कठिन है। भाषा पर आपकी असाधारण पकड़ है इसीलिए अद्भुत सौन्दर्यमयी होने पर ही वह आपकी काव्यात्मक गरिमा को चुनौती नहीं दे पाई है।

इम्फाल — डॉ. देवराज

'आपकी हाइकु कविताओं ने मेरा मन मोह लिया है। गिने चुने शब्दों में अनुभूति की ऐसी गहराई मैं पहली बार देख रहा हूँ। प्रतीक और बिम्बों का ऐसा सफल प्रयोग किसे प्रभावित नहीं करता। देखने में सामान्य-सी लगती बातें अपनी अभिव्यंजना में काफी सारगर्भित हैं।

बोधगया — डॉ. लक्ष्मणप्रसाद सिन्हा

'डॉ अग्रवाल क हाइकुआ में **जीवन का महज स्वीकार हे ।'**

अहमदाबाद **- डॉ आलोक गुप्त**

'हाइकु के हाद पर अग्रवालजा की पकड ह । कथ्य को प्राणतत्त्व क रूप में ओर शिल्प को सम्प्रेषणीयता के रूप में कवि न ग्रहण किया हे । समकालीन जिन स्थितिया का कविता का अन्य शिल्प व्यक्त नहीं कर पा रहा था उनकी अभिव्यक्ति के लिए हाइकु वरदान रूप सिद्ध हुआ ह । **अनुभूति के स्पन्दन हमारी सम्वेदना को जगाने में सक्षम हैं । भाव, विचार और शिल्प की लयात्मकता श्री अग्रवाल के काव्य की अपनी विशिष्टता हे ।**

राष्ट्रवीणा **- डॉ घनानद शर्मा**

गुजरात की सोंधी गध से वर्षो से जुड डॉ भगवतशरण अग्रवाल ने धुएँ क शहर म रहते हुए भी अपने **सत्रह अक्षरीय हाइकुओं** म विविध जीवन-मूल्य जीवन-मृत्यु सुख-दुख एकाकीपन प्रणय आदि का जिस प्रतीकात्मकता से रूपायन किया है उसी तरह प्रकृति प्राकृतिक सुषमा दिन दिनान्त व दिनान्तक आदि का भी सजीव चित्रण किया है ।

हाइकु का **नाद-सौन्दर्य, बिम्बसृष्टि, लयात्मकता, सकेत-गहनता, प्रभविष्णुता** आदि देखते ही बनती हे ।

व्यग्य सवदना खालीपन युगबोध अन्तर्विरोध आदि को उजागर करने में कवि जहाँ सीता राधा आदि का **मिथकीय प्रतीकार्थ** में प्रयाग करता हे वहाँ फूल छडी आकाश पेड सिंह चन्द्र आदि के परम्परायुक्त प्रताकों म **नई अर्थवत्ता** भी भरता है ।

दिल्ली **- डॉ ओमानन्द सारस्वत**

प्रकृति प्राकृतिक सुषमा तथा प्रकृति-मानव का परस्पर सम्बन्ध कवि की भावनाओं में उदात्तता उद्दीप्तता आर उष्णता भर देता है । कवि ने प्रकृति का मानवाकरण ओर मानव का प्रकृतिकरण कर, जीवन के विविध आयाम जीवन-मृत्यु सुख-दुख प्रणय-विरह एकाकीपन अतर्विरोध सवेदना व्यग्य और आत्म-निरीक्षण — सभी कुछ अपने हाइकुओं में उकेरने में सफलता पाई है । सीता राधा रुक्मिणी साँप आदि **मिथकीय प्रतीकों** को नये रूप में सम्पादित किया है ।

विचार कविता दिल्ली **– गोविन्द नारायण मिश्र**

एक सशक्त सजक की दृष्टि स डॉ अग्रवाल न **विविध** जीवन मूल्यों जीवन-मृत्यु, सुख-दु ख एकाकोपन प्रणय इत्यादि को प्रतीकात्मक ढग से उजागर किया है । डॉ अग्रवाल ने मिथकीय बिम्बों के प्रयाग के साथ-साथ फूल

पत्ता जंगल-आसमान सागर पेड़-पौधे चाँद-सूरज आदि को एकदम नई अर्थवत्ता के साथ अभिव्यक्ति प्रदान की है।

स्वतंत्र भारत लखनऊ - मुकेश शारदा

कहीं हाइकु का व्यंग्य-रूप 'सेनर्यू' चोट करता है जैसे-"फसल बढ़ी/ देश में नेताओं की/चौंर भी वही।" या - "छोड़ता नहीं / विदेश-यात्रा भूत / डॉलर-मोह।"

आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित - डॉ सत्यपाल चुघ

बिजली की कौंध सी स्मृतिपटल पर अंकित हो जानेवाली इन हाइकु कविताओं में अटूट जीवनधर्मिता या जीवन के प्रति एक गहरी स्वीकृति झलकती है। निःसंदेह अपनी वक्रोक्ति भंगिमा में समीक्ष्य संग्रह की अधिकांश हाइकु कविताएँ पाठकीय संवेदना का संस्कार और परिष्कार करती हैं।

आजकल दिल्ली - महेश आलोक

आपकी कविताएँ मैं एक बैठक में पढ़ गई। फिर बार-बार उठाकर देखती-पढ़ती-सुनती रही। जब जब देखा, एक नया अर्थ, नया भाव निकलता रहा। छोटे-छोटे शब्दों में अर्थों का जैसे समुद्र लहरा उठा हो। लगा कि बूँदों में भी सागर समा सकता है। मैंने इस प्रकार की कविताओं को इतने मनोयोग से पहली बार पढ़ा। हिन्दी में यह अपने ढंग का अनूठा प्रयोग है। आज जब कविता, - आधुनिक कविता - कविता कम और गद्यमय वार्तालाप वैचारिक बोझ से बोझिल अरुचिकर सी बनती जा रही थी ऐसे में आपकी हाइकु कविताएँ 'नाविक के तीर के समान घाव करें गम्भीर' को चरितार्थ कर, मन झकझोर देनेवाली हैं।

जयपुर - डॉ उषा गोयल

हाइकुकार अपनी पैनी दृष्टि से संवेदना के अंतरतम में डुबकी लगाकर कल्पना के पंखों पर बैठा एक-एक बिम्ब को लाता है और फिर एक सूत्र में पिरो उनके नाद-सौंदर्य, लयात्मकता, संकेत गहनता आदि से नई काव्य-सृष्टि का निर्माण 'हाइकु' के रूप में करता है जिसका संसर्ग प्राप्त कर पाठक भावातिरेक के चिंतन की विविधता में खो जाता है। डॉ अग्रवाल ने अपने 'हाइकुओं' के माध्यम से जीवन को अनेक रूपों में जिया है। स्थूल प्रकृति से लेकर वर्तमान में विघटन की ओर अग्रसर सामाजिक मापदंडों की विद्रूपता तथा कथित संभ्रांत परिवेश के साथ में पनपती विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य, नादगत, स्वच्छ काव्य-सौष्ठव तथा व्यंजना शक्ति की नोंक से, पृष्ठभूमि में दबे पड़े अनेकों प्रश्नों को कुरेद कर सबके सामने लाने का सफल प्रयास इन 'हाइकुओं'

में हुआ है ।

परत-दर-परत सिरसा - सुगनचन्द्र मुक्तेश

भावहीनता क इस युग में आपकी क्या कविता और क्या हाइकु में शिल्प की तराश तथा बुद्धि सवलित सवेदना की महक पाकर, अच्छा लगा ।

रोहतक - डॉ शशिभूषण सिंहल

श्री अग्रवाल हिन्दी के हाइकु-कवियों में वरिष्ठ स्थान रखत हैं । हाइकु रचने म काफी प्रभावी और सिद्धहस्त हैं । उन्होंने हाइकु के मूल मर्म का पहचाना है और उसे भारतीय तत्त्व स सराबोर कर अपनी सवेदनात्मक अनुभूति से पुष्टपोषित किया है । सहज उन्मष से उपजे उनके हाइकुओं में अभिव्यक्ति का कलात्मक पक्ष साफ-सुथरा और सजा हुआ है । मूल हाइकु-कवि की तरह ही श्री अग्रवाल अपने हिन्दी हाइकुओं में बिम्बों को उभार दते हैं - अनुभूति को मुखर करते हैं, लेकिन उनकी व्याख्या नहीं करत । दूसर शब्दों में यदि हम कहें कि उनक हाइकु शुद्ध अनुभूति के सूक्ष्म सवेगों की अभिव्यक्ति की कविता है ता यह गलत न होगा । एक ओर जहाँ व साकतिक शब्दावली म महान सत्य का सहजता स उद्घाटित करत हैं वहीं दूसरा ओर उनके हाइकु सामाजिक विसगतियों से साक्षात्कार भी करवात हैं ।

ऋतुचक्र इन्दौर - कृष्णाकान्त निलोसे

कवि की रचनाधर्मिता उर्वर, उदात्त और उल्लेखनीय है । प्रतीक बिम्बमूलक हैं तथा तथ्यपरक, व्यग्यपरक एव यथार्थपरक भी हैं ।

दक्षिण समाचार, हैदराबाद - डॉ चक्रवर्ती

कवि ने कुछ शाश्वत सवेदनाओं को रूपाकृत करने का सफल उपक्रम किया है ।

प्रम प्रकृति मृत्यु, आस्था अनास्था जिजीविषा अकेलेपन की अनुभूति सघर्ष, अदम्य-उत्साह अनत की अनुभूति आम आदमी की पीडा अनासक्ति आसक्ति, अभावबोध तप आधुनिक सस्कृति ह्रास और उसकी पीडा स्थापित परपराओं की निस्सारता प्रवचना प्रतिशोध आशा-आकाक्षा सत्य की प्रनिष्ठा भय और उसका निरसन, अध्यात्म की अनुभूति स्मृति का माधुर्य एव स्मृतिजनित पीडा त्याग और भोग के बीच का द्वन्द्व कुटिलता और सरलता का युगपत् अनुभूति आत्म-रति आत्म-गौरव एव आत्म प्रतारणा नियति युद्ध को विभीषिका गतिशीलता अडिगता अजस्र जीवन-रस का बोध वफा बेवफाई स्वप्नशीलता सुख की कामना मुग्धता आदि न जाने कितनी सूक्ष्म व अनत सवेदनाओं की लाघवयुक्त अभिव्यक्तियाँ उनके सग्रहों में हुई हैं । इन सवेदनाओं को कभी

प्रताका द्वारा कभा सपाट-सीधे-सरल शब्दा म ता कभी व्यजना का आश्रय लकर व्यक्त किया गया ह । डॉ अग्रवाल भी कहीं कहीं व्यजना-धर्मी हा गय हें और काव्य क्षेत्र म यह एक अनिवायता है । सीमा नहीं, उपलब्धि है ।

सक्षेप म डॉ अग्रवाल न अपन 'हाइकु-सग्रह' म अनत सूक्ष्म सवेदनाओं की सशक्त व प्रभावी अभिव्यक्ति का ह ।

वल्लभविद्यानगर - डॉ सुरशचन्द्र त्रिवेदी

डॉ अग्रवाल की कुछ कविताएँ नजाड हैं । अपना दर्द हा जब इतना घनाभूत हे कि उसा में सारी सृष्टि रगा दिखाई द ता एसे सावभाम दर्द का व्यापकता में अपने-पराए का भद मिट जाता है । यही स्थिति विशिष्ट हे ।

मरठ - डॉ महेशचन्द्र

डॉ अग्रवाल न अपन हाइकुआ में प्रकृति स इतर देश की सस्कृति समाज और परिवेश से सबधित विषयों का भी कथ्य बनाया है । उन्हान उन परिस्थितियों का भी हाइकु का विषय बनाया है जो हमार अतर का मथता है या आह्लाद प्रदान करती हे । यहाँ व तात्र भावान्मष अथवा सान्दर्यानुभूति क चरमक्षण का अभिव्यक्ति देते हैं । उनके हाइकु कवल शिल्प नहीं । व सवदना से इतने सश्लिष्ट हैं कि भाव और छद पूरा सामर्थ्य के साथ एक पूण बिम्ब प्रस्तुत करत हे । यह कविता भी हे और चित्र भी । इनमें बिम्बसष्टि के साथ नादसौन्दर्य एव लयात्मकता है । ये युगबाध अतर्विरोध एव व्यग्य सवदना का व्यक्त करने में सक्षम और नए प्रतीकों म नइ अथवत्ता भरते है ।

देनिक भास्कर, इन्दौर — शतानन्द श्रोत्रिय

जापाना भाषा की सर्वाधिक लाकप्रिय मुक्तक रचना 'हाइकु' का अपनी अभिव्यक्ति के लिए सफल एव अनूठा प्रयोग करनेवाले डॉ अग्रवाल का हिन्दी क वरिष्ठ कवियों में स्थान प्राप्त ह । गिन चुन मात्र 17 अक्षरो के माध्यम से जिन्दगी के हर पडाव पर ठहरते उनके हाइकु अपने अदर अथाह समुद्र की गहराई हाने का आभास दिलात हैं ।

आनन्द डाइजेस्ट, पटना — अहमद रजा हाशमी

साहित्य महोपाध्याय डॉ. भगवतशरण अग्रवाल

जन्मतिथि	23 फरवरी 1930
जन्मस्थान	फतहगंज पूर्वी, जनपद-बरेली, उत्तरप्रदेश
शिक्षा	एम. ए., पीएच. डी., लखनऊ विश्वविद्यालय
पद एवं सेवाएँ	पूर्व अध्यक्ष एवं प्रोफेसर-इन-चार्ज गुजरात विश्वविद्यालय हिन्दी अनुस्नातक केन्द्र एल. डी. आर्ट्स कालेज, अहमदाबाद-9 पूर्व सदस्य कार्यकारिणी गुजरात विश्वविद्यालय पूर्व मानद सदस्य गुजरात विश्वविद्यालय पूर्व अध्यक्ष हिन्दी बोर्ड गुजरात विश्वविद्यालय पूर्व सदस्य बोर्ड आफ एकाउन्टस गु. वि. वि. पूर्व हिन्दी विषय सलाहकार, गुजरात राज्य पाठ्य पुस्तक मंडल, गांधीनगर पूर्व सदस्य हिन्दी बोर्ड दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, भावनगर विश्वविद्यालय एवं उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय पूर्व मंत्री गुजरात विश्वविद्यालय अध्यापक टीचर्स एसोसियेशन पूर्व सम्पादक उत्थान मासिक लखनऊ एवं अग्रदूत मासिक आगरा पूर्व सलाहकार नाकड़क मासिक आगरा आदि
सम्प्रति	कार्यकारिणी समिति सदस्य गुजरात-राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी। सम्पादक, साहित्य-धारा, अहमदाबाद। सदस्य हिन्दी बोर्ड गुजरात विश्वविद्यालय। एकेडेमिक काउन्सिलर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय आदि। विजिटिंग प्रोफेसर गु. वि. वि. हिन्दी अनुस्नातक केन्द्र एवं शोध निर्देशक गुजरात विश्वविद्यालय।
स्थायी निवास	306 सरस्वतीनगर, आजाद सोसायटी के पास अहमदाबाद 380 015 गुजरात भारत।
दूरभाष	6740779